मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

# MVS–013

## वास्तुशास्त्र में पी. जी. (स्नातकोत्तर) डिप्लोमा

## (पी. जी. डी. वी. एस.)

## सत्रांत परीक्षा

## जून, 2026

## एम.वी.एस.-013 : गृह एवं व्यावसायिक वास्तु

*समय : 3 घण्टे* *अधिकतम अंक : 100*

---

***नोट :*** *यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिये गये निर्देश के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

### खण्ड—क

***निर्देश :*** *निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।* $3 \times 20 = 60$

1. शाला एवं अलिन्द विचार पर सुविस्तृत प्रकाश डालिए।

2. गृह प्रवेश विधि पर सुविस्तृत निबन्ध लिखिए।

3. तल, छत एवं सोपानादि विचार पर ग्रन्थोक्त प्रकार से प्रकाश डालिए।

4. गृहाभ्यन्तर व्यवस्था किस प्रकार की जानी चाहिए ? विस्तार से वर्णन कीजिए।

5. पशु एवं वाहन के स्थानादि पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत कीजिए।

6. शिक्षा सम्बन्धी संस्थानों के लिए वास्तु की क्या उपयोगिता है ? विस्तार से प्रकाश डालते हुए वास्तुसम्मत निर्माणों पर चर्चा कीजिए।

## खण्ड—ख

***निर्देश :*** *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।* $4 \times 10 = 40$

7. द्विशाल एवं त्रिशाल वास्तुओं के लक्षण एवं शुभाशुभत्व का वर्णन कीजिए।

8. गृह प्रवेश हेतु प्रशस्त मासों का विचार करते हुए कुम्भचक्र को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

9. भूमि चयन हेतु शुभाशुभ भूमि लक्षणों पर विस्तार से चर्चा प्रस्तुत कीजिए।

10. गृह के निकट शुभाशुभ वृक्षों पर विस्तार से वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

11. औद्योगिक निर्माण के लिए वास्तु की क्या उपयोगिता है ? वर्णन कीजिए।

12. गृह में जलव्यवस्था एवं जल निकास किस प्रकार होना चाहिए ? वास्तुशास्त्र की दृष्टि से विमर्श कीजिए।

13. शयनकक्ष विन्यास को किस प्रकार वास्तु-सम्मत किया जा सकता है ? विस्तृत वर्णन कीजिये।

14. व्यावसायिक वास्तु मुहूर्तों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

× × × × ×